

‘स्टेट ऑफ द वर्ल्ड्स ट्रीज़ रिपोर्ट’: BGCI

प्रलिस के लय

स्टेट ऑफ द वर्ल्ड्स ट्रीज़ रिपोर्ट

मेन्स के लय

भारत में वभिन्न वन प्रजातयों की स्थति और संरक्षण संबधी उपाय

चर्चा में क्यों?

हाल ही में ‘बॉटैनिकल गार्डन्स कंज़र्वेशन इंटरनेशनल’ (BGCI) ने ‘स्टेट ऑफ द वर्ल्ड्स ट्रीज़ रिपोर्ट’ लॉन्च की है।

- इस रिपोर्ट में चेतावनी दी गई है कदुनया भर में लगभग एक-तहिई वृक्ष प्रजातयों के वलुप्त होने का खतरा है, जबक सैकड़ों प्रजातयों वलुप्त होने के कगार पर हैं।
- BGCI एक सदस्यता संगठन है, जो दुनया भर के 100 से अधिक देशों में वनस्पत उद्यान का प्रतनिधित्व करता है। यह बरटिन आधारति एक स्वतंत्र चैरटी है, जसिकी स्थापना वर्ष 1987 में वश्व के वनस्पत उद्यानों को पादप संरक्षण के लयि एक वैश्वकि नेटवर्क से जोड़ने हेतु की गई थी।

प्रमुख बडि

- **जोखमिपूर्ण स्थति वाली प्रजातयों**
 - रिपोर्ट के मुताबकि, पेड़ों की 17,500 प्रजातयों, जो ककुल प्रजातयों का लगभग 30% है, के वलुप्त होने का खतरा है, जबक 440 प्रजातयों के 50 से भी कम वृक्ष बचे हैं।
 - प्रत्येक देश के वनस्पतयों का 11% हसिसा संकटग्रस्त श्रेणी में है।
 - समग्र तौर पर संकटग्रस्त वृक्ष प्रजातयों की संख्या संकटग्रस्त स्तनधारयों, पक्षयों, उभयचरों और सरीसृपों की संयुक्त संख्या से दोगुनी है।
- **सबसे अधिक जोखमि वाले वृक्ष:**
 - सबसे अधिक जोखमि वाले वृक्षों में ‘मैग्नोलया’ और ‘डपिटरोकार्पस’ जैसी प्रजातयों शामिल हैं, जो प्रायः दक्षणि-पूर्व एशयाई वर्षावनों में पाई जाती हैं। इसके अलावा ओक के वृक्ष, मेपल के वृक्ष और आबनूस भी समान खतरों का सामना कर रहे हैं।
- **उच्चतम जोखमि वाले देश:**
 - वृक्ष-प्रजातयों की वविधता के लयि प्रसदिध दुनया के शीर्ष छह देशों में पेड़ों की हजारों कसिमों के वलुप्त होने का खतरा है।
 - सबसे अधिक खतरा ब्राज़ील में है, जहाँ 1,788 प्रजातयों खतरे में हैं। अन्य पाँच देश इंडोनेशया, मलेशया, चीन, कोलंबया और वेनेज़ुएला हैं।
 - ऐसे कुल 27 देश हैं, जहाँ पेड़ों की कोई संकटग्रस्त प्रजातयि नहीं है।
- **द्वीपीय वृक्ष:**
 - यद्यपि अधिक वविधता वाले देशों में वलुप्त के जोखमि से प्रभावति कसिमों की संख्या सबसे अधिक है, कति द्वीपीय वृक्ष प्रजातयों आनुपातिक रूप से अधिक जोखमि में हैं।
 - यह वशिष रूप से चति का वषिय है, क्योंकि कई द्वीपों में पेड़ों की कई ऐसी प्रजातयों भी हैं, जो कहीं और नहीं पाई जाती हैं।
- **प्रमुख खतरे:**
 - पेड़ प्रजातयों के समक्ष शीर्ष तीन खतरों में- फसल उत्पादन, लकड़ी की कटाई और पशुधन खेति शामिल हैं, जबक [जलवायु परिवर्तन](#) और चरम मौसम संबधी उभरते खतरे हैं।
 - बढ़ते समुद्र स्तर और गंभीर मौसम संबधी घटनाओं के कारण कम-से-कम 180 प्रजातयों को प्रत्यक्ष तौर पर खतरों का सामना करना पड़ रहा है।
- **वृक्ष बचाने की आवश्यकता:**
 - **समर्थन प्रणाली:**

- वृक्ष पारिस्थितिकी तंत्र का प्राकृतिक रूप से समर्थन करने में मदद करते हैं और ग्लोबल वार्मिंग तथा जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिये महत्वपूर्ण माने जाते हैं।
- वृक्ष प्रजातियों के विलुप्त होने के दूरगामी प्रभाव (Domino Effect) हो सकते हैं, जिससे कई अन्य प्रजातियों का नुकसान हो सकता है।
- **बर्फ के रूप में कार्य करना:**
 - यह विश्व के 50% स्थलीय कार्बन का भंडारण करते हैं और चरम जलवायु जैसे- **तूफान** (Hurricane) और **सुनामी** की स्थिति में एक बर्फ के रूप में कार्य करते हैं।
- **आवास और भोजन:**
 - कई संकटग्रस्त वृक्ष प्रजातियाँ पक्षियों, स्तनधारियों, उभयचरों, सरीसृपों, कीड़ों और सूक्ष्मजीवों की लाखों अन्य प्रजातियों के लिये आवास एवं भोजन प्रदान करती हैं।
- **नीति निर्माताओं हेतु सुझाव:**
 - **सुरक्षा बढ़ाना:**
 - उन संकटग्रस्त वृक्ष प्रजातियों के लिये संरक्षित क्षेत्र कवरेज का विस्तार करना जो वर्तमान में संरक्षित क्षेत्रों में अच्छी तरह से प्रतिनिधित्व नहीं कर रहे हैं।
 - **संरक्षण:**
 - जहाँ तक संभव हो विश्व स्तर पर संकटग्रस्त वृक्ष प्रजातियों, वनस्पति उद्यान और बीज बैंक संग्रहण केंद्रों का संरक्षण सुनिश्चित करना।
 - **फंडिंग बढ़ाना:**
 - संकटग्रस्त वृक्ष प्रजातियों के लिये सरकार और कॉर्पोरेट वित्तपोषण की उपलब्धता बढ़ाना।
 - **योजनाओं का विस्तार करना:**
 - वृक्षारोपण योजनाओं का विस्तार करना और संकटग्रस्त तथा देशी प्रजातियों का लक्षित रोपण सुनिश्चित करना।
 - **सहयोग बढ़ाना:**
 - अंतरराष्ट्रीय प्रयासों में भाग लेकर वृक्षों को विलुप्त होने से रोकने के लिये वैश्विक सहयोग बढ़ाना।
- **संबंधित भारतीय पहलें:**
 - [नगर वन \(शहरी वन\) योजना](#)
 - [संकल्प पर्व](#)
 - [प्रतिपूरक वनीकरण कोष \(CAF\) अधिनियम](#)
 - [हरति भारत के लिये राष्ट्रीय मशिन](#)
 - [राष्ट्रीय वनरोपण कार्यक्रम](#)

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

PDF Reference URL: <https://www.drishtiiias.com/hindi/printpdf/state-of-the-world-trees-report-bgci>